<u>उद्देश्य</u> - *इस कोर्स का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय संगीत (गायन) के प्रयोगत्मक पक्ष का प्रारम्भिक ज्ञान देकर उनमें शास्त्रीय संगीत के ज्ञान की नींव डालना है।*

क्र0 सं0	कोर्स का नाम	कोर्स कोड	अंक	श्रेयांक
2	**प्रयोगात्मक**	**बी0ए0एम0वी0-102**	**100**	**9**
प्रथम खण्ड	***प्रदर्शन - 1 (यमन)***			
	* **इकाई 1 -** परिचय एवं स्वर विस्तार।			
	* **इकाई 2 -** विलम्बित (आलाप व तान सहित)।			
	* **इकाई 3 -** मध्यलय ख्याल (आलाप व तान सहित)।			
द्वितीय खण्ड	***प्रदर्शन - 2 [(भैरव एवं बिलावल), ध्रुवपद]***			
	* **इकाई 1 -** परिचय एवं स्वर विस्तार।			
	* **इकाई 2 -** मध्यलय ख्याल(आलाप व तान सहित)।			
	* **इकाई 3 -** पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक में ध्रुवपद दुगुन सहित।			
तृतीय खण्ड	***पढन्त एवं मौखिक परीक्षा***			
	* **इकाई 1 -** तालों की पढन्त।			
	* **इकाई 2 -** तालों के ठेकों को लयकारी (दुगुन व चौगुन) में पढ़ना।			
	इकाई 3 - पाठ्यक्रम सम्बन्धित मौखिक परीक्षा।			

राग - यमन, भैरव व बिलावल	***ताल - तीनताल, एकताल व चारताल***

सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री -

1. वसन्त, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0 प्र0 ।

2. हरीश चन्द्र श्रीवास्तव, राग परिचय (सभी भाग), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद ।

3. श्रीमती शान्ति गोवर्धन, संगीत शास्त्र दर्पण ।

4. पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे, भातखण्डे क्रमिक पुस्तक मालिका (सभी भाग), संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0 प्र0 ।